कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

अंधा - युग

(1) अंधा - युग धर्मवीर भारती द्वारा लिखा गया एक बहुचर्चित गीति नाट्य है। इसमें महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से प्रभासतीर्थ के कृष्ण की मृत्यु के क्षण तक की कथा को रूपायित किया गया है। कौरवों तथा पांडवो के बीच का महायुद्ध सत्रह दिनों तक चलता रहा। युद्धोपरांत कौरव पक्ष के प्रायः सभी वीर योद्धा मारे गए। चारों ओर गहन उदासी छाई हुई है। कौरव पक्ष के अश्वत्थामा, दुर्योधन कृपाचार्य एवं कृतवर्मा ही बचे है। अन्त मे दुर्योधन की मृत्यु हो जाती है और अश्वत्थामा विक्षिप्तावस्था को प्राप्त होता है साथ ही गंधारी के शाप से कृष्ण भी मृत्यु को प्राप्त होते है। नाटककार ने कौरवो और पांडवो में से किसी का पक्ष न लेते हुए हुए धर्म - अधर्म, पाप-पुण्य और सत्य - असत्य का तीव्र संघर्ष उत्पन्न किया है। असत्य अधर्म और पाप से परिचालित वह युग गल - गल कर समाप्त हो गया। यहाँ तक कि अधर्म को प्रश्रय देने वाले देने वाले कृष्ण भी मृत्यु को प्राप्त हो गए। वस्तुतः नाटक की कथा वस्तु में कुण्ठा, करुणा, निराशा, रक्तपात, प्रतिशोध

(2) विकृति और अन्धा व्याप्त है। सम्पूर्ण नाटक का व्यक्तित्व ही अंधा है। समाज, परिवार, नैतिकता - यहाँ तक कृष्ण भी अन्धे हैं। यह नाटक मानव मन की अतृप्तेच्छाओं, मनोभावों, मन - व्यापारों तथा मानसिक व्यवहारों को आधुनिक युग के कलेवर में प्रस्तुत करता है। नाटककार वर्तमान युग को भी महाभारत काल के समान नैतिक संकट का काल मानता है। मनुष्य की अनास्था, कुंठा आज के युग की पहचान बन गई है।

अंधा - युग में नाटककार धर्मवीर भारती के पात्रों की नितान्त मौलिक संकल्पनाएं प्रस्तुत की है।

अंधा - युग की भाषा काव्यात्मक है जिसमें लय और तान का समन्वय सफलतापूर्वक किया गया है। भाषा बोधगम्य और प्रांजल है। नाटक की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। संस्कृत शब्दों के प्रयोग से महाभारत कालीन परिवेश का स्मरण हो जाता है किन्तु कहीं - कहीं उर्दू शब्दों का भी यथावसर प्रयोग किया गया है।

अंधा - युग नाटक पाँच अंकों में विभाजित है प्रतीक शैली में किया गया है जैसे कौरव नगरी, पशु का उदय, अश्वत्थामा का अर्धसत्य, पंख पहिये और पट्टियाँ, गांधारी का शाप आदि।